परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, इन्दौर

शैक्षणिक सत्र 2020-21

कक्षा - आठ   विषय - हिन्दी

वसंत भाग - ३

पाठ 11- जब सिनेमा ने बोलना सीखा

मौड्यूल- 1

प्रस्तुतकर्त्री

मंजू देवी, प्र.स्ना.अ.वरि.मान (हिन्दी / संस्कृत)

वसंत
भाग 3
कक्षा 8 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

कक्षा 8 पाठ 11

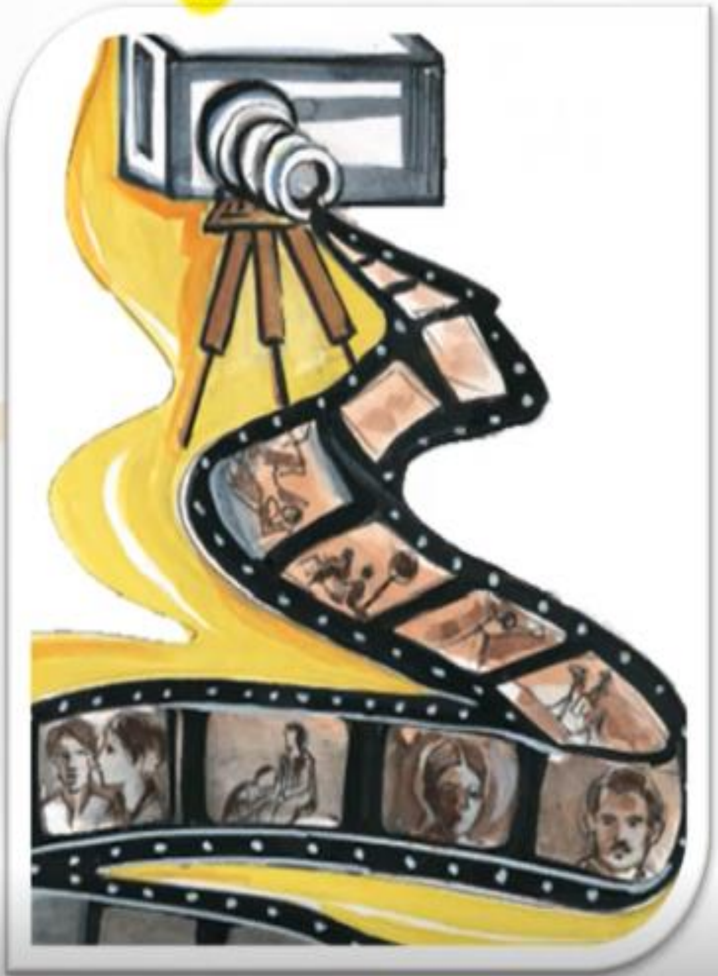

जब सिनेमा ने बोलना सीखा

हिन्दी

(प्रदीप तिवारी)

लेखक परिचय

प्रदीप तिवारी जी एक प्रसिद्ध लेखक और अभिनेता हैं| बॉलीवुड में उनका काफी नाम है| उनके द्वारा लिखे गए कथानक बॉलीवुड की फिल्मों में प्रयोग किए जाते हैं| साल 2006 में आई फिल्म "जवानी- दीवानी" प्रदीप तिवारी जी के द्वारा लिखी गई स्क्रिप्ट पर केंद्रित है| इसके अलावा और भी कई फिल्में प्रदीप तिवारी जी के द्वारा लिखी गई स्क्रिप्ट पर आधारित हैं|

बॉलीवुड की
रचनात्मक यात्रा
© mapsofindia.com

पाठ प्रवेश

‘जब सिनेमा ने बोलना सीखा’ अध्याय के लेखक ‘प्रदीप तिवारी जी’ हैं। प्रदीप तिवारी जी ने इस अध्याय में सिनेमा जगत में आए परिवर्तन को उजागर करने की कोशिश की है। आरम्भ में मूक फिल्में यानी आवाज रहित फिल्में बनती थी। उनमें किसी तरह की आवाज का प्रयोगे नहीं होता था। इसके कुछ समय के बाद सिनेमा जगत में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आया और सवाक फिल्मों का आरम्भ हुआ। इस अध्याय को निबंध के रूप में लिखा गया है जैसा कि इस अध्याय के नाम “जब सिनेमा ने बोलना सीखा’ के अर्थ से ही स्पष्ट होता है कि इस अध्याय में उस समय का वर्णन है जब सिनेमा में आवाज़ को शामिल किया गया। प्रदीप तिवारी के निबंध ‘जब सिनेमा ने बोलना सीखा’ में भारतीय सिनेमा के इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव को उजागर किया गया है। यह निबंध बिना आवाज़ के सिनेमा के आवाज़ के साथ सिनेमा में विकसित होने की कहानी बयान करता है। ऐसी फ़िल्में जिसमें आवाज भी थी, वे शिक्षा की दृष्टि से भी अर्थवान सबित हुई क्योंकि अब लोग सुन सकते थे और फिल्म के मुख्य भाग में दी गई सीख को समझ कर अपने जीवन में उतार भी सकते थे।

पाठ का सारांश

आलम आरा' पहली सवाक फिल्म है। ये फिल्म 14 मार्च 1931 को बनी। इसके निर्देशक अर्देशिर एम ईरानी थे। इसके नायक बिट्ठल तथा नायिका जबैदा थी। अर्देशिर को इस फिल्म को बनाने के बाद 'भारतीय सवाक फिल्म का पिता' कहा गया। इस फिल्म का पहला गाना "दे दे खुदा के नाम" था। ये फिल्म 8 सप्ताह तक हाउस फुल चली थी।

इस फिल्म में सिर्फ तीन वादय यंत्र प्रयोग किये गए थे। आलम आरा फिल्म फैंटेसी फिल्म थी। फिल्मे ने हिंदी-उर्दू के तालमेल वाली हिंदुस्तानी भाषा को लोकप्रिय बनाया। इसी फिल्म के उपरान्त ही फिल्मों में कई 'गायक - अभिनेता' बड़े परदे पर नजर आने लगे। आलम आरा भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा और पश्चिम एशिया में पसंद की गई। इसी सिनेमा से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था।

शब्द - अर्थ

सजीव-जीते-जागते

तारीख-तिथि

दौर-समय

शिखर- चोटी

वाद्य-संगीत के यंत्र

रिकार्ड- प्रमाण

फैंटेसी- मौज-मस्ती

पटकथा-कहानी का स्वरूप ।

शत-प्रतिशत-पूरी तरह से

सिनेमा-चलचित्र

मूक-गूंगा

इंटरव्यू- साक्षात्कार

साउंड- ध्वनि

कृत्रिम- मानव द्वारा

संयोजन- मिला हुआ

पाठ की व्याख्या

लेखक यहाँ पर देश की पहली बोलने वाली फिल्म का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जब देश की पहली बोलने वाली फिल्म ‘आलम आरा’ प्रदर्शित होने वाली थी तो शहर भर में उसके पोस्टरों में कुछ इस तरह की पंक्तियाँ लिखी हुई थी कि - ‘वे सभी जिन्दा हैं, साँस ले रहे हैं, शत-प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा मानव ज़िंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।’ इन पंक्तियों का अर्थ था कि फिल्म में जितने भी पात्र हैं वह सब जीवित नज़र आ रहे हैं, सभी उनको बोलते, बातें करते देख सकते हैं, इस तरह का विज्ञापन तैयार करके लोगों को फिल्म को देखने के लिए आकर्षित किया गया था और यह ‘आलम आरा’ फिल्म का सबसे पहला पोस्टर था।

14 मार्च 1931 यह भारतीय सिनेमा के लिए एक ऐतिहासिक तारीख बन गई, इस तारीख में भारतीय सिनेमा जगत में एक बहुत बड़ा बदलाव आया। इसी दिन पहली बार भारत के सिनेमा में बोलने वाली फिल्म का प्रदर्शन हुआ था। परन्तु यह, वह समय था जब लोगों के दवारा मूक सिनेमा को बहुत अधिक पसंद किया जाता था। मूक सिनेमा की भी अपनी एक प्रसिद्धि थी, उसका अपना एक अलग स्थान था।

जिस साल पहली बोलती फिल्म को पर्दे पर उतारा गया था उसी साल कई मूक फिल्में भी विभिन्न भाषाओं में बनी हुई थी। लेखक के कहने का अभिप्राय है कि ऐसा नहीं है कि एक दम से मूक फिल्में बनना बंद हो चुकी थी, सवाक फिल्म के आ जाने पर भी कई अलग-अगल भाषाओं में अभी-भी मूक फिल्में बन रही थी। परन्तु अब बोलती फिल्मों का नया समय शुरू हो गया था। अब एक नई तकनीकी आ गई थी, जिसके कारण फिल्म निर्माता आवाज को फिल्मों में शामिल कर सकते थे।

पहली बोलती फिल्म आलम ------- जरूरी हिस्सा बनी।

भारतीय सिनेमा की पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' बनाने वाले फिल्मकार 'अर्देशिर एम .ईरानी' थे। अर्देशिर ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म 'शो बोट' देखी थी जिससे उन्हें इस तरह की फिल्म बनाने की प्रेरणा मिली और उनके मन में भी भारतीय सिनेमा में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जागी।

अर्देशिर जी ने जब देखा कि पारसी के रंगमंच नाटकों को लोगों द्वारा बहुत ही पसंद किया जाता है, तो उन्हें ख्याल आया कि किसी पारसी रंगमंच नाटक की कहानी पर आधारित फिल्म बनाई जाए। अर्देशिर जी ने फैसला किया कि इस नाटक के जो गाने थे, वह भी लोगों में बहुत प्रसिद्ध थे, इसलिए उन्होंने वे गाने भी ज्यों के त्यों फिल्म में शामिल कर दिए। एक साक्षात्कार में अर्देशिर ने कहा था कि 'उस समय डायलॉग राइटर नहीं होते थे। ऐसी सुविधा उपलब्ध नहीं थी, गीतकार नहीं था, कोई खासतौर पर लिखने वाला नहीं था, और संगीतकार भी नहीं था।' जब अर्देशिर जी फिल्म बनाने लगे तो उन्हें यह कमियाँ महसूस हुई। जिनके बाद जरूरत महसूस की गई कि फिल्म को अच्छी तरफ से बनाने के लिए एक खासतौर से संवाद लेखक होना चाहिए, गीतकार भी होना चाहिए जो कि अच्छे से गीत लिखे, जो लोगों में मशहूर हो। संगीतकार उस गीत को अच्छा संगीत दे।

पहली बोलती फिल्म आलम ------- जरूरी हिस्सा बनी।

पहले मूक फिल्में बनती थी, जिसमें किसी तरह के गीत-संगीत या संवाद नहीं होते थे लेकिन अब सवाक फिल्में बनाने लगी थी तो इसलिए गीतकार और संगीतकार की जरूरत महसूस हुई। आलम आरा फिल्म के गानों के संगीत के लिए अर्देशिर जी ने स्वयं के संगीत को चुना। फिल्म के संगीत में महज तीन वादय यंत्र प्रयोग किए गए थे - तबला, हारमोनियम और वायलिन। आलम आरा फिल्म में अर्देशिर जी ने खासतौर पर किसी को भी संगीतकार या गीतकार की उपाधि नहीं दी थी क्योंकि सभी ने अपना-अपना योगदान दिया था। जिसे संगीत की थोड़ी जानकारी थी, उसने अपना योगदान दिया। इसीलिए ऐसा नहीं कहा जा सकता कि किसी खास व्यक्ति ने संगीत दिया या गीत लिखे। सभी का मिला-जुला सहयोग था।

आलम आरा फिल्म में पहले गायक जिन्होंने पर्दे के पीछे से अपनी आवाज़ में गीत गाए वे बने डब्ल .एम . खान। डब्ल .खान द्वारा गाया गया पहला गाना था ‘दे दे खुदा के नानम पर प्यारे अगर देने की ताकत है’। आलम आरा का संगीत उस समय डिस्क फॉर्म में रिकार्ड नहीं किया जा सका था, क्योंकि उस समय ऐसे संसाधान नहीं थे जैसे आज कल मौजूद हैं। जब फिल्म की शूटिंग शुरू हुई तो आवाज़ के कारण ही इसकी शूटिंग रात में करनी पड़ती थी। ऐसा इसलिए करना पड़ा था क्योंकि दिन में बहुत शोर-शराबा होता था और यह पहली सवाक फिल्म थी इसलिए रात का समय चुना गया। उस सयम पूरा प्रकाश अर्टीफिशल लाइट द्वारा पूरा दिन जैसा महौल कायम किया जाता था।

मूक युग की अधिकतर फिल्मों को दिन के प्रकाश में शूट कर लिया जाता था, क्योंकि मूक फिल्मों को बनाने के लिए कोई ऐसी खास जरूरत महसूस नहीं होती थी। मगर आलम आरा एक सवाक फिल्म थी और शूटिंग रात में होने के कारण इसमें कृत्रिम अर्थात बनावटी प्रकाश व्यवस्था करनी पड़ी। क्योंकि उन्हें दिन जैसी आभास करवाना था। यहीं से प्रकाश प्रणाली बनी अर्थात फिल्मों में प्रकाश प्रणाली का इस्तेमाल आरम्भ हुआ। जो आगे फिल्म के निर्माण का जरूरी हिस्सा बनी। क्योंकि अब दिन और रात दोनों समय फिल्में बनाई जा सकती थी।

आलम आरा ने भविष्य----------------------- वाले स्टार थे।

‘आलम आरा’ फिल्म ने भविष्य को कई स्टार और तकनीशियन तो दिए ही। साथ-ही-साथ यह वह फिल्म थी जिसमें एक इतिहास रचा और एक नए निर्माण की शुरूआत हुई। अर्देशिर की कंपनी ने ही भारतीय सिनेमा के लिए डेढ़ सौ से अधिक मूक और लगभग सौ सवाक् फिल्में बनाईं। यह उनका भारतीय सिनेमा के लिए बहुत बड़ा योगदान था।

आलम आरा फिल्म ‘अरेबियन नाइट्स’ जैसी ही आकर्षक थी। जिस तरह लोग अरेबियन नाइट्स’ के आधार पर होने वाले कार्यक्रमों की ओर आकर्षित होते थे। उसी तरह जब आलम आरा फिल्म प्रदर्शित हुई तो लोगों में उसका आकर्षण भी ‘अरेबियन नाइट्स’ की तरह ही था। इस फिल्म ने हिंदी-उर्दू के मेलजोल से बनी हिन्दुस्तानी भाषा को लोगों के मध्य अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया। इस फिल्म में आम बोलचाल की भाषा द्वारा हमारे भारत के संस्कृति और गीतों को सुन्दर तरीके से संगीत दिया गया और नृत्य के अभिनय के अनोखे संयोजन देखने को मिले। फिल्म की नायिका जुबैदा थीं और नायक थे विट्ठल। वे उस समय के सबसे ज्यादा वेतन पाने वाले स्टार थे अर्थात् उन्हें सबसे ज्यादा वेतन मिलता था।

प्रश्न - उत्तर

प्रश्न1: जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन-से वाक्य छापे गए? उस फिल्म में कितने चेहरे थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: देश की पहली बोलती फिल्म के विज्ञापन के लिए छापे गए वाक्य इस प्रकार थे -"वे सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत-प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इनसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।" पाठ के आधार पर 'आलम आरा' में कुल मिलाकर 78 चेहरे थे अर्थात् काम कर रहे थे।

प्रश्न2: पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से लिया? विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर: फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म 'शो बोट' देखी और तभी उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी। इस फ़िल्म का आधार उन्होंने पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक से लिया।

प्रश्न - उत्तर

प्रश्न3: मूक सिनेमा में संवाद नहीं होते, उसमें दैहिक अभिनय की प्रधानता होती है। पर, जब सिनेमा बोलने लगा, उसमें अनेक परिवर्तन हुए। उन परिवर्तनों को अभिनेता, दर्शक और कुछ तकनीकी दृष्टि से पाठ का आधार लेकर खोजें, साथ ही अपनी कल्पना का भी सहयोग लें।

उत्तर: मूक सिनेमा ने बोलना सीखा तो बहुत सारे परिवर्तन हुए। बोलती फिल्म बनने के कारण अभिनेताओं पढ़ा-लिखा होना ज़रूरी हो गया, क्योंकि अब उन्हें संवाद भी बोलने पड़ते थे। दर्शकों पर भी अभिनेताओं का प्रभाव पड़ने लगा। नायक-नायिका के लोकप्रिय होने से औरतें अभिनेत्रियों की केश सज्जा तथा उनके कपड़ों की नकल करने लगीं। दृश्य और श्रव्य माध्यम के एक ही फ़िल्म में सम्मिश्रित हो जाने से तकनीकी दृष्टि से भी बहुत सारे परिवर्तन हुए।

प्रश्न4: डब फिल्में किसे कहते हैं? कभी-कभी डब फ़िल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज़ में अंतर आ जाता है। इसका कारण क्या हो सकता है?

उत्तर: फिल्मों में जब अभिनेताओं को दूसरे की आवाज़ दी जाती है तो उसे डब कहते हैं।कभी-कभी फिल्मों में आवाज तथा अभिनेता के मुँह खोलने में अंतर आ जाता है क्योंकि डब करने वाले और अभिनय करने वाले की बोलने की गति समान नहीं होती या किसी तकनीकी दिक्कत के कारण हो जाता है।

इति

धन्यवाद